

अपनी बात

साथियों,

यह पहला अवसर है जब मैं आपसे इस अंक के माध्यम से जुड़ रहा हूं। वेकोलि की "राजभाषा विविधा" पिछले एक वर्ष से लगातार वेकोलि की वेबसाइट पर अपलोड की जा रही है, जिसमें आप जैसे कुछ सुधी पाठकगण अपनी रचनाएं भेजकर इस ई पत्रिका को नये कलेवर देने के लिए प्रयासरत रहते हैं। यह पत्रिका आगे भी इसी तरह जारी रहे इसके लिए आप सभी से यही आग्रह है कि आप जैसे लोग

अपनी मिली पहली फुर्सत के समय में अपने आये विचारों , कहानी, लेख, कविताओं को लिपीबद्ध करते हुए राजभाषा विभाग में अवश्य भिजवाएं। जहां एक ओर आपको अपने लिखे विचारों से आत्मसंतुष्टि होगी वही दूसरी ओर अन्य पाठकगण आपके विचारों को पढ़कर लाभान्वित होंगे। साथ ही अपनी फोटो भी अवश्य दें ताकि चित्र परिचय से आपकी पहचान में और निखार लाया जा सके।

लोगों से मिली अच्छी
प्रतिक्रियाएं प्राप्त होने पर इस ई
पत्रिका से जुड़े सभी लोगों का मनोबल
बढ़ा है। यह आपका सहयोग सराहनीय
है।

इस ई-पत्रिका के माध्यम से
आप आज तक साहित्य के क्षेत्र में
अपनी ख्याति अर्जित किए गये
कहानीकारों की कहानी को पढ़ा है और
उसे सराहा भी है।

मित्रों आप सभी जानते हैं जून
का महिना आते ही जन जागृति
पर्यावरण की ओर हो जाती है। इस
समय सारा विश्व पर्यावरण प्रदूषण की
समस्या से जूझ रहा है। हमारे देश में
तो समस्या और भी गंभीर है। हमारे
कई शहर विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित
शहरों की सूची में आ चुके हैं। यह

बड़ी चिंता का विषय है। जहां हमें कई
बीमारियों का सामना करना पड़ता है
वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक आपदाओं
का सामना करना पड़ता है। इसी तरह
हमने महाराष्ट्र के लातूर की कहानी
अखबार की जुबानी जानी। गिरता भू
जल स्तर भी एक बड़ी समस्या
बनकर हमारे सामने है।

अतः समय रहते सचेत रहना
समय की मांग है। हर वर्ष की तरह
इस वर्ष भी वेकोलि तथा उसके सभी
क्षेत्रों में पर्यावरण दिवस मनाया गया।

इस बार अपनी बात के माध्यम
से इतना ही शेष अगली बार।

आपका
(ए.के. सिंह)
राजभाषा प्रमुख

प्रबंधन

प्रबंधन - आधुनिक युग की सबसे बड़ी चुनौती है , निजी और कामकाजी जिंदगियों के दो पाटों के बीच रहकर भी नियोक्ता, परिवार और स्वयं को खुश रखना। यह चुनौती महिलाओं के सामने ज्यादा है।



दो पाटन के बीच में *****

अब महिलाओं की जिम्मेदारियां दोगुणी हो गई हैं। घर के काम तो करने ही हैं, दफ्तर भी जाना है। इस चक्कर में कई बार न तो घरेलू जिम्मेदारियां पूरी हो पाती हैं , न ही कार्यालय में काम समय पर होता है। तो इससे पहले कि आप खुद को हार काम न कर पाने के लिए कोसे

और लताड़े, आज ही अपने काम और बाकी जिंदगी के बीच बेहतर संतुलन साधने के लिए इन टिप्स पर मनन करें -

प्राथमिकताएं तय करें

बिजनेस टैलेंट ग्रुप के संस्थापक जोडी मिलर कहते हैं , यदि आप संतुलन चाहते हैं , तो आपको निजी और व्यावसायिक तौर पर काँट-छाट और सुधार के लिए खुद को मजबूर करना ही पड़ेगा। मतलब , उन चीजों को जाने दें , जो बहुत ज्यादा जरूरी नहीं हैं । हर चीज के लिए हां कहकर स्वयं को तनाव न दें और सबसे अहम बातों के लिए खुद को खाली समय दें।

सीखें समय प्रबंधन

टालमटोली छोड़ें। ज्यादातर लोगों को तनाव अपनी अस्त-व्यस्त जीवनशैली और टालने की आदत के कारण होता है। अधिक वास्तविक लक्ष्य और समय सीमाएं तय करना सीखें । आप देखेंगी कि न केवल

तनाव कम होगा , बल्कि काम भी बेहतर होगा।

बोझ बांटे

चीजें आएंगी और आपको मदद की जरूरत पड़ेगी। देखें कि कौन लोग हैं, जो गाहे- बगाहे मदद के लिए हाजिर हो सकते हैं। इनमें परिजन , पड़ोसी, दोस्त और सहकर्मी शामिल हैं। आमतौर पर हमें लगता है कि मौ ही वह सक्षम व्यक्ति हूं , जो फलां काम को ढंग से कर सकता है। लेकिन वास्तव में ऐसा होता नहीं है। अपने जीवनसाथी और परिवार वालों पर पारिवारिक जिम्मेदारियों के लिए भरोसा करना सीखें। घर , बच्चों और अभिभावकों की देखभाल सिर्फ एक व्यक्ति का काम नहीं है।



कहने से न हिचके

कभी-कभी काम के बोझ से निजात पाने को थोड़ी छूट के लिए कहना ही पड़ता है। आप चाहें तो घर से काम कर देने के विकल्प पर भी बात कर सकती हैं। कम से कम कुछ समय के लिए तो ऐसा किया जा सकता है। जब तक आप कहेंगी नहीं , तब तक आपको पता ही नहीं चलेगा कि जवाब सकारात्मक मिलेगा या नकारात्मक। वैसे भी , समझदार बॉस और नियोक्ता आपकी पारिवारिक दिक्कतों को समझते हुए थोड़े समय या पूरे बदलाव के लिए तैयार होते हैं।

साफ बात करें

अपने बॉस और सहकर्मियों के साथ साफ सुथरा संचार रखें। यदि पारिवारिक समस्याओं के चलते आप दिन के किसी खास समय में या वीकएंड्स में उपलब्ध नहीं हो सकती हैं, तो यह सुनिश्चित करें की आपके

बॉस को इसकी जानकारी हो और वे सहमत भी हों।

नया कैरियर खोजें

कई बार वर्तमान काम में बदलाव की गुंजाइश नहीं होती। ऐसे में अगर आपको खुद या परिवार के लिए अधिक समय की दरकार है , तो काम बदल देना ही व्यावहारिक उपाय होगा।

तकनीक का इस्तेमाल करें

तकनीक को काम और जीवन के बीच संतुलन बनाने में आपका मददगार होना चाहिए , न कि उसे आपकी जिंदगी पर राज करना चाहिए। यह तय करें कि भोजन सरीखे तयशुदा समय आप तकनीक के व्यवधानसे पूरी तरह आजाद हो। न तो कोई जरूरी फोन बीच में आए , न ई-मेल करने की झंझट हो।

घर से काम करें

घर से भी काम कर लें , बशर्ते यह सहज और सम्भव हो। इससे ऑफिस के लिए तैयार होने और वहां तक पहुंचने का समय बच सकता है। घर में ऑफिस की चटर पटर और मीटिंग्स का झंझट नहीं होता।

मार्गदर्शक खोजें

कोई ऐसा अनुभवी देखें , जिसने काम और जिंदगी में संतुलन अच्छी तरह साधा हो। उससे इसके सूत्र पूछें , सलाह लें।

समय तय करें

रातों- रात इसकी उम्मीद न करने लग जाएं। इसमें वक्त तो लगेगा ही। तब तक धीरे-धीरे , योजनाबद्ध ढंग से काम करने की कोशिशों में जुटे रहें।

ऑफिस के साथियों से बेहतर तालमेल बनाने के उपाय



ऑफिस में आपका काम और तरक्की बहुत कुछ इस बात पर भी निर्भर करती है कि सहकर्मियों से आपके संबंध कैसे हैं और आप उन्हें कितना समझ पाते हैं। हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू से जानते हैं साथियों को समझने और किसी अप्रिय स्थिति में कैसे उनके साथ तालमेल बिठाकर बातचीत को फिर पटरी पर लाया जाए। साथ ही कुछ तरीके अपने तनाव को कम करने और साथियों के लिए ऑफिस में काम का तनावमुक्त माहौल बनाने के **मुश्किल बातचीत में लहजा महत्वपूर्ण**

अगर ऑफिस में किसी से आपके विचार अक्सर टकरा जाते हैं और कई मुद्दों पर आप उनसे सहमत

नहीं होते हैं तो कभी-कभी उनके साथ बातचीत में कठोर शब्द आने लगते हैं। संबंध अप्रिय होने लगते हैं। इसे ठीक किया जा सकता है। कभी-कभी किसी बात का गलत अर्थ निकाल लिए जाने से भी ऐसे स्थिति बनती है।

अक्सर मान लिया जाता है कि अगर कोई किसी के विचार से सहमत नहीं है तो वह उसे पसंद भी नहीं करता है, लेकिन ऐसा नहीं है। अगर बातचीत कभी अचानक अप्रिय होने लगती है तो इसका संकेत तो मिलने ही लगता है। ऐसे में स्थिति को संभालना जरूरी है। आप कह सकते हैं कि, मैं हमेशा आपके साथ काम करना चाहता हूँ या आपके साथ काम करना मुझे पसंद है अचानक अच्छी या प्रशंसा की बात सुनने से बात पटरी पर आ जाती है।

(स्रोत - डिफ्र्यूजिंग एन इमोशनली चार्ज्ड कनवरसेशन विथ कलीग | रॉन फ्रेडमैन)

किसी के बारे में राय बदलने के तरीके

किसी के साथ लंबे समय तक काम करने से एक तरह से अनुमान लगाने और उम्मीद करने की आदत पड़ जाती है। हम अनुमान लगाने लगते हैं कि सहकर्मी किसी स्थिति में क्या करेगा, किसी खास काम को वह किस तरह अंजाम देगा और किस बात पर कैसी प्रतिक्रिया देगा। लेकिन कई बार यह अनुमान गलत साबित होते हैं, क्योंकि हर दिन परिस्थिति अलग होती है। कभी-कभी ऐसी कोशिश भी करनी चाहिए कि अपने साथी को नए सिरे से समझने की कोशिश की जाए। देखा जाए कि आज वह कैसा दिख रहा है। आज उनकी बातचीत का अंदाज क्या है, चेहरे के भाव क्या है। यह हमेशा की तरह है या कुछ बदले हुए है। इस तरह का ऑब्जरवेशन उनके प्रति आपके नजरिये को बदल सकता है। काम के दौरान आपका उनके साथ तालमेल बेहतर बना सकता है।

(स्रोत - सी कलीग्स एज दे आर , नॉट एज दे वर। डुनकॉन कोम्बे)

टीम को तनाव से दूर रखना जरूरी

अपने तनाव को मैनेज करना अपने आप में मुश्किल काम है। लेकिन अहम बात यह है भी है कि आप कैसे अपनी टीम को तनाव से निकाल सकते हैं। एक तरीका तो यह है कि अपने साथी कर्मचारी की व्यक्तिगत तरक्की और विकास पर ध्यान दिया जाए। अगर किसी क्षेत्र में जरूरत है तो उनकी ट्रेनिंग का इंतजाम किया जाए। लोगों को तरोताजा और एक्टिव रहने लायक गतिविधियों के लिए प्रेरित करना भी एक अच्छा उपाय है। कभी-कभी साथियों के साथ वॉकिंग मीटिंग भी की जा सकती है। इससे टीम को नया अनुभव मिलेगा। मीटिंग भी बोझिल न होकर दिलचस्प हो जाएगी। अपने साथियों को अच्छा महसूस कराना और उन्हें प्रेरित करना संभव है। सबसे अहम बात यह है कि अपनी टीम से अच्छा काम लेने के लिए उनका तनाव दूर करना बुनियादी जरूरत है।

लेसन फ्रॉम ग्रेट थिंकर

अच्छा राज्य वो होता है जहां कानून कम होते हैं , लेकिन उनका पालन सख्ती से होता है



अगर सच की तलाश है तो हर चीज को संदेह से देखना जरूरी

रेने देकार्त फ्रांस के फिलॉसफर , गणितज्ञ और वैज्ञानिक थे। उन्हें आधुनिक पश्चिमी दर्शनशास्त्र का पितामह कहा जाता है। उन्होंने अपने जीवन के करीब 20 साल डच रिपब्लिक में बिताए। उन्होंने शरीर

और दिमाग के द्वैतवाद को नए संदर्भों में पेश किया। प्रचलित बातों को विज्ञान के आधार पर समझाया।

अगर आप सच को तलाश रहे हैं तो जरूरी है कि जहां तक संभव हो जीवन में एक बार हर चीज पर संदेह करें।

अपने विचारों के अलावा कोई भी अन्य चीज पूरी तरह हमारे नियंत्रण में नहीं आ सकती।

बुद्धिमान आदमी कभी भी एक बार किसी से धोखा खाने के बाद उस पर फिर भरोसा नहीं करता।

काल्पनिक चीज का आनंद सच्चे डर से अधिक कीमती होता है।

हर समस्या हल होने पर कुछ सबक छोड जाती है। यह सबक भविष्य में सामने आने वाली समस्याओं के समाधान में बहुत काम आते हैं। समस्याएं और सबक सिलसिले की तरह एक के पीछे एक चलते हैं।

महान या विलक्षण लोगों के दिमाग भी बहुत सारी बुराइयों और बहुत सी भलाइयों से भरे होते हैं।

जब यह पता न हो कि सच क्या है तो सच के सबसे नजदीक जो संभावना हो उस पर भरोसा करना चाहिए।

जब कोई मुझे अपमानित करता है और आरोप लगाता है तो मैं कोशिश करता हूँ कि वह मेरे मन तक नहीं पहुंचे। दिमाग को परिपक्व बनाने के लिए सीखना कम और मनन ज्यादा करना चाहिए।

किसी मुश्किल को हल करना हो तो उसे उतने टुकड़ों में बांट दो जितने संभव हो या जरूरी हो। मुश्किल खुद ब खुद खत्म हो जाएगी।

यह काफी नहीं है कि कोई बुद्धिमान है और उसमें बहुत दिमाग है। अहम बात यह है कि दिमाग का इस्तेमाल हो रहा है या नहीं। या कहां हो रहा है।

बुद्धिमान और सहज लोग यह देखकर भी विस्मित हो जाते हैं कि उनका दिमाग कितना कमजोर है और वह कैसी-कैसी गलतियां करता है।

किसी भी चीज को एक बार संदेह से देखने के बाद उसे परख कर ही सही या अच्छा बुरा तय करना अच्छा तरीका है।

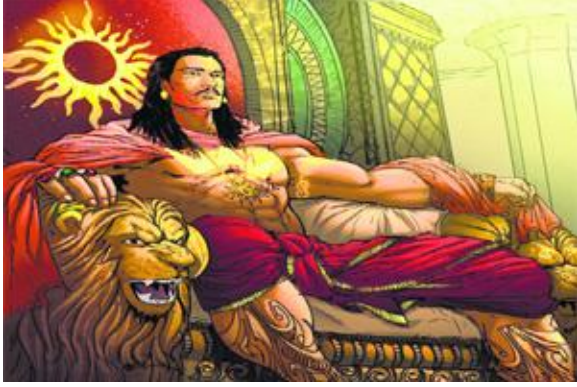
लगता है कॉमनसेंस ही एक ऐसी चीज है जो सभी में बराबरी से बांटी गई है, क्योंकि कोई भी यह नहीं मानता कि उसमें यह कम है या उसे और चाहिए।

यह जानने के लिए लोग क्या सोचते हैं, जरूरी है कि यह देखा जाए कि वह करते क्या हैं ? वह जो कहते हैं यह उतना अहम नहीं है।

अच्छी किताबें पढ़ना अपने समय और पुराने समय के आला दिमागों से बातचीत करने के समान है।

एकदम परफेक्ट चीजें और काम उतना ही दुर्लभ होता है जितना कि परिपक्व और सम्पूर्ण इंसान।

जमाना बदल गया, अगर



आज कर्ण से कोई ब्राम्हण कवच कुंडल मांगने जाता तो वह तुरंत कहाता ' वाह प्यारे ! हमी रहे मूर्ख बनाने को ! तुम्हें कवच कुंडल दे दें तो हम क्या करें , रोये तुम्हारे नाम को? चलो खिसको यहां से ! आज कौरव पांडव जुआ या तीन पत्ती खेलते तो भूलकर भी कोई राज्य दांव पर न लगाता, और अगर लगाकर हार भी जाता तो दूसरे दिन राज्य देने से साफ इनकार कर देता कि भाई मैं होश में नहीं था, माफ करना

यदि महाभारत फिर से लिखा जाए

आदमी का स्वभाव है कि वह गुटका लताशता है। मगर हमारे देश में अभी विद्वान व्यक्ति और व्यस्त व्यक्ति की दो अलग अलग श्रेणियां नहीं बनीं। हजार पन्नों की किताब देख कोई घबराता नहीं , पढने पर बोर नहीं होता। लेखक अपनी बात को विस्तार देना जानते हैं। एक सामान्य कथानक के पिचके गुब्बारे में अपनी प्रतिभा से इतने शब्द फूंक देते है कि, वह फुलकर मोटा हो जाता है और लेखक का नाम साहित्य के अंधेरे में "निओन साइन" सा चमकने लगता है। इसी कारण पॉकेट बुकों के इस जमाने में अभी कडू के आकार की किताबें बाजार में आते रहती है और वे पाठक जिनके दिमाग और काठ की अलमारियां मजबूत है , उन्हें खरीदते रहते हैं , इस प्रोत्साहन के बावजूद किसी लेखक में इतनी हिम्मत नहीं हुई कि वह महाभारत-सा महाग्रंथ रच दें। महाभारत के बाद भी अनेक युद्ध

लडे गए , परिवार में झगडे हुए और षडयंत्र रचे गये , नया महाभारत नहीं रचा गया ।

महाभारतकार व्यासजी एक मामले में आज के लेखक की तुलना में किस्मत वाले थे , उनकी उम्र लंबी थी। विचित्रवीर्य के जमाने से जनमेजय तक वे सक्रिय रहे। महाभारत की भूमिका से अंत तक उन्होंने सब कुछ देखा और महाग्रंथ रच दिया। आज भी महाभारत होते हैं, पर लेखक उससे दूर हैं और अगर पास है तो बात को पूरी तौर से समझने में असमर्थ महाभारत सा प्रोजेक्ट उसके बस की बात नहीं। एक जिंदगी में यह काम नहीं हो सकता। धृतराष्ट्र , युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, कृष्ण, द्रौपदी, दुर्योधन, अश्वत्थामा और कर्ण की टक्कर का एक भी पात्र ठोस के रूप में मिल जाए तो एक शानदार उपन्यास के लिये वह काफी हो। इनमें से सिर्फ एक के दम पर ऐसा तंबू ताना जा सकता है कि साहित्य में नाम अमर

हो जाएं। व्यासजी ने तो इस मामले में गजब कर दिया। जयद्रथ , विदुर, शकुनि, दुःशासन, अभिमन्यु आदि छोटे चरित्र भी इतने खडे कर दिए कि भुलाए नहीं जा सकते।

जमाना बदल गया है, तौर तरीके बदल गये हैं। नया नया लेखक अगर महाभारत लिखना शुरू कर दे तो बात आगे न बढ़े। जुए में राज्य हार जाने वाले पांडवों को द्रौपदी तकाल दे देती और छुट्टी करती , और अगर जमीन के बंटवारे के सवाल को लेकर भाइयों में झगडा होता भी सही तो कचहरी में होता। मामला बरसों जिला कोर्ट से आगे नहीं बढ़ता , इसी बीच अगर महाबली भीम किसी दिन दुर्योधन के साथ मारपीट कर लेते तो तुरन्त फौजदारी का मुकदमा और लग जाता। उस महाभारत में 'नरो ववा कुंजरो वा' किस्म का सिर्फ एक बयान कलंक बनकर रह गया, पर नए महाभारत का हर पात्र रोज कचहरी में झूठे बयान देता कि दूसरे पक्ष के लिए सबूत देना

कठिन हो जाता। वकील के चक्कर लगाते लगाते बेचारे धर्मराज के पैर छिल जाते। जितना जुए में नहीं हारते उससे अधिक तो वकीलों पर खर्च हो जाता। आज का लेखक अगर महाभारत लिखता तो पूरी कहानी दूसरी होती। फिर भी अपेक्षाकृत वह मजे में रहता। किसी साहित्यिक पत्र में धारावाहिक रूप से प्रकाशित करवाता और अच्छा खासा रूपया भी वसूल करता। कई भागों में छपवाता और भारी रॉयल्टी वसूलता। फिर संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित कर कोर्स में लगवा देता। व्यासजी महाभारत लिखते समय रॉयल्टी की कल्पना नहीं कर पाए न फिल्म की पर आज का लेखक इन सभी पक्षों पर विचार कर ही काम करता। अश्वत्थामा के विषय में कहा जाता है कि कृष्ण के शाप से वह आज भी जीवित है। भला बताइए, महाभारत का एक पात्र अभी उपलब्ध है तो जरूर कहीं वोटर लिस्ट में होगा। यह सच है कि वह कौरव पक्षीय है , पर नया लेखक भी तो

तटस्थता पर जोर देता है । महाभारत की पुनः रचना के लिए अश्वत्थामा से काफी उपयोगी सामग्री मिल सकती है।

मगर भाई , महाभारत लिखकर भी क्या होगा ? जनता में लोकप्रिय हो जाए, बिक्री खूब हो, मगर ये आलोचक लोग किताब को कौड़ी लिफ्ट नहीं देंगे। कहेंगे कि कथा को अनावश्यक विस्तार दिया गया है। उपदेशों की भरमार है, जैसे युद्ध आरंभ होने की घड़ियों में कृष्ण द्वारा अर्जुन को इतना लंबा उपदेश देना अस्वाभाविक जान पड़ता है। इस उपदेश के चलने तक लड़ाई कैसे रूकी रही होगी , समझ में नहीं आता। लेखक के नाम रखने तक में पक्षपात किया है। कौरव पक्ष के व्यक्तियों के नाम दुर्योधन , दुःशासन, दुर्मुख आदि हैं , जो उचित नहीं प्रतीत होते। भला बताइए , जन्म के समय पिता को क्या पता था कि इन्हें आगे जाकर विलेन (खलनायक) बनना है, जो वह ऐसे नाम रखता।

बेचारे लेखक को जवाब देना मुश्किल हो जाता। इतना विशाल ग्रंथ सिर पर उठाए वह साहित्य में अपनी जगह बनाने की कोशिश करता और आलोचक उसे मार भगाते। व्यासजी के सामने ये दिक्कते नहीं थी। साहित्यिक वादों और अहंजीवी आलोचकों से वे घिरे हुए नहीं थे, और आज का लेखक यों भी अकेलेपन का चित्रण करने का इच्छुक है। उसका हीरो अर्जुन नहीं, अश्वत्थामा है जो कड़वी स्मृतियों का भार ले आज भी जी रहा है, जो युद्ध के नाम से कांपता है।

सो आज का लेखक अगर महाभारत लिखने भी बैठे तो वह जाने अनजाने दूसरी, कहानी लिखने लग जाएगा। हो सकता है वह लिख भी रहा हो।

*** सूक्तियां ***

- * किसी का दिल दुखाने वाली बात न कहें, वक्त बीत जाता है, बातें याद रहती हैं।
- * लंबी जबान और लंबा धागा हमेशा उलझ जाता है।
- * बुरे विचार उस हृदय में प्रवेश नहीं कर सकते जिसके द्वार पर ईश्वरीय-विचार के पहरेदार खड़े हों।
- * दुनियां आपके 'उदाहरण' से बदलेगी आपकी 'राय' से नहीं।
- * इंसान की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसका मनोबल है।
- * सफलता का चिराग परिश्रम से जलता है।
- * ऐसा जीवन जियो कि अगर कोई आपकी बुराई भी करे तो लोग उस पर विश्वास न करें।

* कमजोर तब रूकते हैं जब वे थक जाते हैं और विजेता तब रूकते हैं जब वे जीत जाते हैं।

* अहंकार से जिस व्यक्ति का मन मैला है, करोड़ों की भीड़ में भी वो सदा अकेले रहते हैं।

* हमारी समस्या का समाधान किसी के पास नहीं है, सिवाय हमारे।

* काम में ईश्वर का साथ मांगो लेकिन ईश्वर ये काम कर दे, ऐसा मत मांगो।

* जिस हाथ से अच्छा कार्य हो, वह हाथ तीर्थ है।

* अच्छा दिल संबंधों को जीत सकता है पर अच्छा स्वभाव उसे आजीवन निभा सकता है ।

* अगर मैं सुखी होना चाहता हूं तो कोई मुझे दुखी नहीं कर सकता।

* गलतियां क्षमा की जा सकती हैं अगर आपके पास उन्हें स्वीकारने का साहस हो।

* ईमानदारी बरगद के पेड़ के समान है जो देर से बढ़ती है किन्तु चिरस्थायी रहती है।

* यदि कोई व्यक्ति आपको गुस्सा दिलाने में सफल होता है तो यकीनन आप उसकी हाथ की कठपुतली हैं।

* जिसके पास उम्मीद हैं वह लाख बार हार के भी नहीं हारता।

* कुछ देने के लिए दिल बड़ा होना चाहिए, हैसियत नहीं।

* घर बड़ा हो या छोटा , अगर मिठास न हो तो इंसान तो क्या , चीटियां भी नहीं आती।

* इस जन्म का पैसा अगले जन्म में काम नहीं आता लेकिन पुण्य जन्मों - जन्म तक काम आता है।

* जो 'प्राप्त' हैं वो ही 'पर्याप्त' हैं।
इन दो शब्दों में सुख बे हिसाब हैं।

* वह अच्छाई, जो बुरा करने वाले को, मदद करें, अच्छाई नहीं होती हैं।

राजभाषा समाचार

कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि और रुझान पैदा करने के लिये तथा कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग में तेजी लाने के उद्देश्य से हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन वेकोलि मुख्यालय में जारी है।

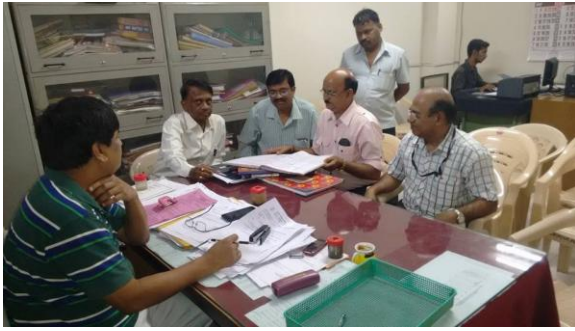
इसी की अगली कड़ी में अगला कदम बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग की ओर से विगत 26 जून, 2016 को मुख्यालय के विधि एवं भू एवं राजस्व विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच तात्कालिक राजभाषा लिखित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस आयोजित प्रतियोगिता में विभाग से संबंधित टिप्पणी, वाक्यांश एवं शब्दावली पूछी गयी। इस प्रतियोगिता में विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहर्ष हिस्सा लेकर अपनी सहभागिता दर्ज की।

इस लिखित प्रतियोगिता में श्री गौरव पालीवाल, सहायक प्रबंधक (विधि), श्रीमती मेघा हरदास, प्रबंधक (विधि) एवं सुश्री नीरू यादव, प्रबंधन प्रशिक्षु को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए जिन्हें नकद पुरस्कार महाप्रबंधक भू एवं राजस्व श्री वी. के. गुप्ता, विधि विभाग के विभागाध्यक्ष श्री पी . जी . गोडबोले द्वारा एवं राजभाषा प्रमुख श्री ए . के. सिंह तथा विभाग के अधिकारियों / कर्मचारियों की गरिमामय उपस्थिति में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

इसी तरह दिनांक 30 मई, 2016 को उमरेड क्षेत्र का राजभाषा प्रगति निरीक्षण वेकोलि मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के

सदस्यों द्वारा किया गया एवं पूर्व सूचना के अनुसार उमरेड क्षेत्र में तात्कालिक लिखित परीक्षा ली गयी, जिसमें क्षेत्रीय मुख्यालय के श्री जंगबहादुर सिंह, कार्यालय अधीक्षक, श्री संजय कुमार झा, प्रबंधक (उत्खनन) सुश्री परमजीत कौर बल, केटे एक एवं रूही खान, सहायक प्रबंधक (कार्मिक) क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।



उमरेड क्षेत्र में निरीक्षण करते हुए
वेकोलि मुख्यालय की टीम



क्षेत्रीय महाप्रबंधक श्री टी. एन. झा के
साथ प्रतियोगिता के प्रतिभागी

क्षेत्रीय महाप्रबंधक श्री टी. एन. झा के
करकमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

निरीक्षण के दौरान समिति ने उमरेड क्षेत्र की राजभाषा प्रगति पर अपना संतोष व्यक्त किया। किन्तु निरीक्षण के दौरान क्षेत्र में कुछ खामियां पायी गयी , जिसे संबंधित क्षेत्रीय कार्मिक प्रमुख ने दूर करने का आश्वासन दिया ।



उमरेड क्षेत्र तात्कालिक राजभाषा प्रतियोगिता का दृश्य



वेकोलि मुख्यालय की तात्कालिक राजभाषा प्रतियोगिता के विजेताओं के साथ वरिष्ठ अधिकारीगण एवं अन्य
